श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

तृतीय वर्ष - अभ्यास - १

जून-२०१९
गुणांक - १००

प्रश्न - पत्र

सूचना : १. नाम और एनरोलमेंट नंबर बिना का पेपर रद्द किया जायेगा । २. लाल स्याही के पेन का उपयोग न करें । ३. समझ में न आये ऐसे अक्षरों वाले जवाब पत्र जांचे नहीं जायेंगे । ४. जवाब पत्र में ही योग्य खाने में जवाब लिखना है, साथ में दूसरा पेपर जोडना नहीं है, जोडने पर तीन मार्क्स काट लिये जायेंगे । ५. जवाब पत्र हर महिने की ता. २५ तक भेजना जरुरी है, आगे-पीछे आए पेपर जांचे नही जायेंगे । ६. सभी जवाब अभ्यासक्रम के आधार पर ही लिखना है । ७. जिस महिने का प्रश्न पत्र है, उसके बाद के महिने की २५ ता. को आपके मार्क्स तथा सही उत्तर इन्टरनेट पर दे दिये जायेंगें, उसके बाद आए हुये उत्तर पत्र स्वीकृत नहीं होंगे तथा फोन पर जवाब नहीं दिया जायेगा । ८. उत्तर पत्र में अभ्यासक्रम का नंबर लिखना जरुरी है ।

प्रश्न नं. १ रिक्त स्थान की पूर्ति करो - २०

१. आत्मा तो सदा.....में रहने के स्वभाव वाला है ।
२. भयंकर शब्दो से भयभीत करने वाले वन में ..... उन्हें भयभीत नहीं करता ।
३. श्रावक के द्वार ..... कहलाते है ।
४. अनादिकाल से एकेन्द्रिय जीव को ..... मिथ्यात्व होता है ।
५. आहार की असर आहर लेने वाले ..... मन पर पडती है ।
६. संसारी जीव ..... ग्रस्त होते है ।
७. धर्म का मूल दया है यही ..... के लिये श्रेष्ठ मार्ग है ।
८. भव्य जीवों को संक्षिप्त में ..... करा देने का प्रयोजन है ।
९. परमात्मा का मार्ग एकांत का नहीं ..... का है ।
१०. प्रभवस्वामी महावीर के शासन के प्रथम ..... थे ।
११. ग्रंथ की सफलता में कोई भी विघ्न न आये इसके लिये ..... करने में आया है ।
१२. ..... देने से शय्यंभवसूरि ने मनकमुनि का आयु सिर्फ ६ महिने शेष है यह जाना ।
१३. मनुष्य बनना भी ..... ही है ।
१४. सत्य ..... एक जैन धर्म ही है ।
१५. सास्वादन गुणस्थान ..... जीवों को ही होता है ।
१६. दशवैकालिकसूत्र यह प्रत्येक ..... के संयम जीवन का आधार स्तंभ है ।
१७. मिथ्यात्व से मोहित हुए जीव..... को जानते नहीं ।
१८. साधु को खानदान..... सुसंस्कारी घरों में आहार लेने जाने की नसीहत देने में आई है ।
१९. आत्म विकास की इच्छा रखने वाले हर साधक को ..... का ज्ञान अति आवश्यक है ।
२०. उपशम सम्यक्त्व ..... का कारण है ।

प्रश्न नं. २ एक शब्द में जवाब लिखो - १५

१. जो पुरुष श्री पार्श्वनाथ प्रभु के चरण युगल को हमेशा नमन करते हैं, वे क्षणभर में किसे प्राप्त करते हैं ?
२. आराधना में मन नहीं लगता हो तो परमात्मा के शासन में कैसा मार्ग बताया गया है ?
३. प्रभव लूट के इरादे के साथ कहाँ पहुँचा ?
४. जीव विचार और नवतत्व के अभ्यास से क्या प्राप्त करने की जिज्ञासा होती है ?
५. जीव को शिव के मार्ग का परिचय कौन कराता रहेगा ?
६. भव्य जीवों को क्या कराकर मोक्ष की अभिलाषा जागृत करनी है ?
७. इस अवसर्पिणी काल में भरत क्षेत्र के मानवों के लिये मुक्ति के द्वार किसने खोले थे ?
८. साधु किसे शांत करने के लिये आहार करते हैं ?
९. कौनसे गुणस्थानक से गिरते जीव को सम्यक्त्व का अंश होता है ?
१०. जयपुर नगर कहाँ वसा हुआ था ?
११. परंपरा से चले आये धर्म को ही सच्चा मानना वह क्या है ?
१२. पापी व हिंसक वातावरण की असर में यदि साधु का मन रंग जाये तो क्या मुश्किल बन जाय ?
१३. कर्मो के कारण जीव जिसमें दुखी हो, दंडित हो उसे क्या कहते है ?
१४. शय्यंभव भट्ट का गौत्र क्या था ?
१५. ज्ञानी महात्माओं ने गोचरी की क्रिया में कैसा बनने की बात कही है ?

प्रश्न नं. ३ नीचे दिये गये शब्दों के अर्थ लिखो - १०

१. मिच्छतं २) अडवीसु ३) थोसामि ४) एकादशं ५) धर्मधीः ६) व्व ७) पअेहिं ८) नाद्यनन्ता ९) संखित्तयरी १०) सेय
११) निव्वाविअ १२) जानात्ति १३) णय १४) दुव्वाय १५) परिच्युतः १६) फुरिअ १७) सद १८) पुढवाइ १९) सन्ना २०) आभोअं

१०

प्रश्न नं. ४ जोडियाँ लगाओ (सिर्फ 'B' के नंबर लिखो) -

A	B	A	B
१) प्रभव स्वामी	१) चौद पूर्व	६) मृगलियो	६) एकासने की परंपरा
२) व्यक्त मिथ्यात्व	२) दृष्टि	७) शय्यंभवसूरि	७) ऋषभदत्त
३) दश वैकालिक	३) दंडक प्रकरण	८) संघयण बल	८) शुद्ध - चारित्र
४) गजसार मुनि	४) दावानल	९) इन्द्र	९) मनक मुनि
५) निर्दोष गोचरी	५) जिनेश्वर	१०) संग्रहणी	१०) संव्यवहार राशि

१०

प्रश्न नं. ५ निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संख्या में लिखो -

१. सास्वादन गुणस्थान पर रहा हुआ जीव कितनी प्रकृति का बंध करता है ?
२. ठाणांग सूत्र की वृत्ति में कितने प्रकार के मिथ्यात्व कहे हैं ?
३. जंबुस्वामी को दहेज में कितनी संपत्ति मिली थी ?
४. ज्योतिषीयो के कितने दंडक है ?
५. अनंतानुबंधी कषाय कितने हैं ?
६. प्रभव स्वामी का युग प्रधान पद कितने साल का था ?
७. व्यक्त मिथ्यात्व कितने हैं ?
८. जंबुकुमार का दीक्षा पर्याय कितना था ?
९. गुणस्थानक कुल कितने हैं ?
१०. राजकुमार प्रभव ने कितनी दैवी विद्यायें प्राप्त की थी ?

१०

प्रश्न नं. ६ नीचे के वाक्य सही (✓) हैं या गलत (×) बताओ -

१. दीपक भले ही शुद्ध एवं शुभ्र तेल से जलता हो ।
२. मिथ्यात्व गुणस्थानक पर जाने से पहले जीव सम्यक्त्व का वमन करता है ।
३. प्रभव स्वामी को अपने पाट के लिये योग्य पट्टधर अपने समुदाय में दिख रहा था ।
४. पार्श्व प्रभु को प्रणाम मात्र करने वालो ने हृदय में इच्छित स्थान को प्राप्त किया है ।
५. जंबुस्वामी ने गुरु उपदेश से वैराग्य पाया ।
६. अप्काय के जीवों को अभयदान देने साधु सदैव तैयार ही होता है ।
७. अभिनिवेशिक मिथ्यात्व अव्यक्त मिथ्यात्व है ।
८. शय्यंभवसूरि ने तैंतीस वर्ष तक आचार्य पद पर रहकर शासन प्रभावना की ।
९. ग्रंथकार महर्षी ग्रंथ के प्रारंभ से पूर्व-मांगलिक कर रहे हैं ।
१०. साधु को गोचरी पानी का लाभ देने की विनंती करना यह श्रावक का कर्तव्य है ।

१०

प्रश्न नं. ७ नीचे के वाक्य किस पृष्ठ पर है वह पृष्ठ नंबर लिखो -

१. जैसा कुल होता है वैसा घर में व्यवहार होता है ?
२. हे भव्यात्माओं । वह तुम सुनो ।
३. मार्ग में तोप का गोला एकदम नजदीक से गुजरने से मुश्किल से बचे ।
४. किसी ने दुधपाक का भोजन किया और उसे वमन हुआ ।
५. वो माता-पिता के प्रमे को और आशिर्वाद को प्राप्त नहीं कर सका ।
६. खेद पाये हुए और कायर लोको ने जिसमें मुसाफिरों के साथ को लूटा है ।
७. चाहे उतना जानो, समझो, पढो परंतु वह ज्ञान कभी भी खत्म नहीं होता ।
८. जिसके उसके हाथ में शासन की डोरी सौंपी जाय तो लाभ के बजाय हानि ज्यादा होती है ।
९. जिनके सभी अंग कोढ जैसे बडे रोग रुपी चिनगारी से जल गये हैं ।
१०. अव्यक्त मिथ्यात्व मोहरुप है, याने अज्ञान तुल्य जानना ।

१५

प्रश्न नं. ८ अपनी भाषा में समझाओ -

१. सास्वादन गुणस्थान समझाओ २) "वर्तमान जोग" शब्दों का महत्व समझाओ ३) दंडक की प्रथम गाथा में क्या है ?
४. प्रभवस्वामी किस तरह प्रतिबोध पाये ? ५) वन का कैसा अग्नि किसे भयभीत नहीं करता ?

उत्तर पत्र नीचे लिखे पते पर भेजिए :
शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१ जिल्हा : जलगांव,
मो. ९०२८२४२४८४. सही परिणाम और सही जवाब के लिये वेब साईट www.shatrunjayacademy.com